डॉ॰ संगीता राय
अतिथि शिक्षक
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज, आरा

देवता - परिचय

अग्नि देव

वैदिक साहित्य में पृथ्वी - स्थानीय देवताओं में अग्नि का सर्वप्रमुख स्थान है। महत्त्व की दृष्टि से इन्द्र के बाद लगभग 200 सूक्तों में अग्नि देव का स्तवन किया गया है। अग्निसूक्त के ऋषि विश्वामित्र, देवता अग्नि तथा छन्द गायत्री है।

अग्नि शब्द संस्कृत के 'अग' धातु ~~से और~~ से निष्पन्न है। निरुक्त में अग्नि का निर्वचन इस प्रकार से किया गया है - अग्रणीः भवति, 'अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते' अङ्गं नयति सन्नममानः। अक्नोपनः भवति - इति स्थौलाष्ठीविः। अग्नि को अगुआ ~~भी~~ ~~जात~~ कहा जाता है क्योंकि यज्ञों में सर्वप्रथम उन्हें ही आमंत्रित किया जाता है। "यज्ञ में दी जाने वाली वस्तुएँ यथा तृण काष्ठादि दी जाने पर ~~उसे~~ अग्नि ~~उसे~~ अपना अंग बना लेता है, अतः 'अग्नि' कहलाता है। स्थौलाष्ठीवि आचार्य के मतानुसार अग्नि अक्नोपन होता है अर्थात् सब रसों को सूखा कर देता है, भिगाता नहीं है, स्निग्ध नहीं करता है, अतः अग्नि कहलाता है। अग्नि के स्वरूप को ~~नहीं~~ निम्न बिन्दुओं में समझा जा सकता है —

1) अग्नि का रूप :→ अग्नि का नाम भौतिक अग्नि से अभिन्न होने के कारण मानवाकृति के रूप में उसका विकास अपेक्षाकृत बहुत कम हुआ है। उसके मानवीकरण के लिए याज्ञिक अग्नि को ही आधार बनाया गया है। उसकी घृतपृष्ठ, घृतमुख, घृतकेश, शोभनजिह्व, ज्वालकेश, घृतलोम, सहस्त्राक्ष, सहस्त्रशृङ्ग इत्यादि नामों से जाना जाता है।

उसके दांत स्वर्णिम, उज्ज्वल अथवा लोहे के समान हैं। उसके जबड़े तीखे हैं। उसके एक ज्वालामय मस्तक है अथवा तीन मस्तक हैं और सात रश्मियां हैं। उसकी तीन अथवा सात जिह्वा हैं। घृत उसका नेत्र है - 'घृतं मे चक्षुः"

अग्नि का जन्म :→ अग्नि की उत्पत्ति के विषय में बहुत कल्पनाएँ की गई हैं। उसे त्रिविधजन्मा, द्विजन्मा और अनेक जन्मों वाला कहा गया है। आकाश से अग्नि की उत्पत्ति बताई गई है। अन्तरिक्षस्थ जल से अग्नि की उत्पत्ति कही गयी है। वहाँ अग्नि से तात्पर्य "विद्युत" से है। ऋग्वेद के पुरुष-सूक्त के अनुसार अग्नि की उत्पत्ति विराट्पुरुष के मुख से हुई है - 'मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च'। इन्द्र ने दो पत्थरों के बीच अग्नि को उत्पन्न किया - "यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान।" इसके अतिरिक्त अग्नि का जन्म दो अरणियों के घर्षण से किंवा दश युवतियों से हुआ माना जाता है। त्वष्टा, आपस्, उषस्, द्यावा, पृथिवी, अथवा इन्द्र को अग्नि का उद्भावक कहा गया है।

भोजन :→ अग्नि को दिन में तीन बार भोजन प्रदान किया जाता है - "त्रिरस्ते अन्नं कृण्वत् सास्मन्नहन्।" इसका भोजन काष्ठ अथवा घृत है और पेय तरल घृत है। वह यज्ञ में दी जाने वाली हवि को ग्रहण करता है।

गमन :→ अग्नि का पथ कृष्णवर्ण है। वह एक ऐसे विद्युत् रथ पर अथवा रथ पर चलता है। जो प्रदीप्त, उज्ज्वल, प्रकाशमान्, स्वर्णिम या सुन्दर है। वह रथ दो मनोज्ञ, मनोजवा, घृतपृष्ठ, लोहित, वायुप्रेरित अश्वों द्वारा खींचा जाता है।

यज्ञ के साथ अग्नि का सम्बन्ध :→ अग्नि का यज्ञ से अभिन्न सम्बन्ध है। उसे यज्ञ का ऋत्विक कहा गया है। उसे सभी कार्यों के आगे किया जाता है अर्थात् अगुवा बनाया जाता है, इसीलिये वह पुरोहित है। वह होता भी है। वह देवताओं का आवाहन करता है और यज्ञ-भाग देवताओं तक

पहुँचाता है —

"अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ॥

देवताओं के साथ अग्नि का सम्बन्ध :→ अग्नि का बहुधा अन्य देवताओं के साथ सम्बन्ध का कथन किया गया है। इन्द्र के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। वह उसका युगल भाई है। वरुण भी अग्नि का भाई बताया गया है।

मानव जीवन के साथ अग्नि का सम्बन्ध :→ अग्नि का मानव-जीवन के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। उसको दमूनस, गृहपति, विश्वपति, आदि नामों से पुकारा जाता है। कौटुम्बिक जीवन में अग्नि को पिता, भाई, पुत्र आदि रूपों में चित्रित किया गया है।

त्रयात्मक स्वरूप :→ स्वरूप की त्रयात्मकता अग्नि का एक अन्य वैशिष्ट्य है। द्युलोक, अन्तरिक्ष और भूलोक - इन तीनों में उसका जन्म होना, उसके तीन शीर्ष, तीन जिह्वायें, तीन शरीर, तीन प्रकार के प्रकाश और तीन आश्रय स्थान, दिन में तीन बार उसका जन्म, तीन बार आहुति स्वीकार करना आदि उक्त तथ्य के प्रत्यायक हैं।

गुण :→ अग्नि प्रकाशमय है। इसीलिए वह रात्रि को प्रकाश युक्त बना देने में समर्थ है। वह प्रशंसनीय कर्म अथवा प्रज्ञा वाला है। वह यज्ञों का रक्षक और सत्य का प्रकाशक है —

"राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम् ।
वर्धमानं स्वे दमे ॥

यजमान का उपकारक :→ अग्नि यज्ञकर्ता का सतत उपकारक और कल्याणकर्ता है। अग्नि के माध्यम से याज्ञिक को धन, पुष्टि, यश और वीर पुत्र पौत्रादिकों का लाभ होता है। वह उत्तम धनादिक का प्रदाता है। जिस प्रकार एक पिता अपने पुत्र के लिये कल्याण-भावना रखता है, उसी प्रकार अग्नि भी कल्याण करने वाला है। इसीलिए सभी मनुष्य अपने कल्याण के लिए उसके साहचर्य की कामना करते हैं —

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव ।
सचस्वा नः स्वस्तये ॥

वैदिक देववाद में अग्नि को एक सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। वह सर्वोच्च प्रकाशमान् देव है। वह अमरत्व का अभिभावक तथा अधिपति है। ऋग्वेद में वैश्वानर तनूनपात्, नराशंस, जातवेदस् आदि नामों से भी इनकी स्तुति की गई है।

—x—